बोतलबंद पानी के भ्रामक दावे

डॉ रामप्रताप गुप्ता

भारत में ही नहीं, इस समय पूरे विश्व में आम आदमी के लिए साफ एवं सुरक्षित पेयजल प्राप्त करना दिनोंदिन कठिन होता जा रहा है। पहले तो हर व्यक्ति को कुएं, नदी, तालाब, झील आदि से साफ-सुरक्षित पेयजल उपलब्ध था। परंतु आज हमारी ही नासमझी और लापरवाही से इनमें से अधिकांश स्रोत प्रदूषित हो गए हैं। इनका पानी पीने के काबिल नहीं रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ का अनुमान है कि इन दिनों विश्व में लगभग पचास लाख लोग प्रदूषित पानी के कारण बीमार होकर अकाल मृत्यु का शिकार हो रहे हैं। इनमें से अधिकांश बच्चे होते हैं। ऐसा अनुमान है कि आगामी पच्चीस वर्षों में विश्व की एक तिहाई आबादी यानी लगभग पचास राष्ट्र साफ-सुरक्षित पेयजल के अभाव की समस्या से ग्रसित हो जाएंगे।

इस परिप्रेक्ष्य में इस समय पेयजल स्रोतों को प्रदूषण से मुक्त करने तथा उन तक विश्व के हर व्यक्ति की सहज-सरल पहुंच बनाने के लिए एक विश्वव्यापी अभियान की आवश्यकता है। परंतु आज की लाभ और लोभ से संचालित इस व्यवस्था में पूंजीपति जो थोड़ा-सा साफ-सुरक्षित पेयजल उपलब्ध है, उसे बोतलों में भरकर मनमानी कीमत पर बेचकर और निर्यात करके अपनी तिजोरियां भरने में लगे हैं। युरोमॉनीटर स्टेटिस्टिकल एंजेसी का अनुमान है कि सन 2000 में पानी की बोतल का व्यवसाय छत्तीस अरब डालर का था, जो लगातार बढ़ रहा है।

भारत की गिनती भी पेयजल के अभाव से ग्रस्त राष्ट्रों में होती है। इस स्थिति का फायदा उठाने के लिए अनेक कंपनियां पानी की बोतल के व्यवसाय में प्रवेश कर चुकी हैं। हाल ही में इस व्यवसाय की एक बड़ी कंपनी ने सरकार से हिमालय के ग्लेशियरों से पिघलने वाले पानी को बोतलों में भरकर निर्यात करने की अनुमति मांगी है। चूंकि वैश्विक तापमान में वृद्धि के कारण इन ग्लेशियरों के पिघलने की गति बढ़ रही है, अतः यह कंपनी इस व्यवसाय में आगे चलकर बहुत अच्छी सम्भावनाएं देख रही है।

भारत का अनुभव है कि बोतलबंद पानी के व्यवसाय में रत कंपनियां ग्रामीण क्षेत्रों में भूजल का दोहन करने की अनुमति लेती हैं, उसका तेज़ी से दोहन करती हैं और जब वह समाप्त हो जाता है तो अन्यत्र यही प्रक्रिया दोहराने हेतु चल देती हैं। इस तरह ये कंपनियां शहरी आबादी के लिए तो पेयजल की आपूर्ति करती हैं परंतु इससे ग्रामीण आबादी के लिए पानी की समस्या उग्र से उग्रतर होती जाती है।

सवाल यह भी है कि शहरी और उच्च आय वाली आबादी को ये कंपनियां बोतल का जो पानी बेच रही हैं, उसे साफ-सुरक्षित बता रही हैं, क्या वास्तव में वह सुरक्षित है? प्राकृतिक संसाधन सुरक्षा परिषद ने जब सन 1999 में अमेरिका की 103 कंपनियों के पानी की जांच की तो पाया था कि उनमें से एक-तिहाई कंपनियां की बोतलों में तो सीधे-सीधे नल का पानी भरा हुआ था। या वह इतना ही साफ और सुरक्षित था जितना कि नल का पानी होता है। एक कंपनी तो अपने पानी को पहाड़ी झरने का साफ, सुरक्षित और अनेक उपयोगी खनिज लवणों वाला बताकर बेच रही थी, मगर वास्तव में उसका पानी एक औद्योगिक बस्ती में स्थित एक कुएं का प्रदूषित पानी था। बोतल के पानी में आर्सेनिक जैसा विषैला रसायन

निर्धारित मात्रा से भी ज़्यादा मात्रा में मौजूद था। उसमें रोगों के कीटाणु भी थे।

सेंटर फॉर साइन्स एंड एन्वायरमेंट (सी.एस.ई.) द्वारा जांच किए जाने पर भारत में भी बोतलों में बिकने वाला पानी अशुद्ध एवं हानिकारक पाया गया। संयुक्त राष्ट्र संघ के खाद्य एवं कृषि संगठन द्वारा सन 1997 में किए गए एक अध्ययन के अनुसार बोतलों में बिकने वाला पानी किसी भी मापदंड पर नल के पानी से श्रेष्ठ नहीं पाया गया।

बोतलबंद पानी का व्यवसाय आम आदमी का आर्थिक शोषण तो करता ही है, साथ ही उसे पर्यावरण प्रदूषण का शिकार भी बनाता है। विश्व प्रकृति निधि (डब्ल्यू.डब्ल्यू.एफ.) द्वारा सन 2001 में किए गए एक अध्ययन के अनुसार प्लास्टिक की ये बोतलें उत्पादन के दौरान तथा फेंके जाने पर, दोनों ही समय प्रदूषण का कारण बनती हैं। विश्व में प्रति वर्ष पन्द्रह लाख टन प्लास्टिक का कचरा केवल इन बोतलों का होता है। यह नष्ट न होकर अनेक पारिस्थितिक विकृतियों का कारण बनता है। विश्व में उत्पादित एक चौथाई पानी की बोतलें अन्य राष्ट्रों को निर्यात की जाती हैं। इनके परिवहन की प्रक्रिया में ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन होता है जो वैश्विक तापमान में वृद्धि का कारण बनता है।

इस तरह हम देखते हैं कि पानी की बोतलें साफ-सुरक्षित पेयजल की आपूर्ति के बहाने उच्च क्रय शक्ति वाले उपभोक्ताओं की जेबें खाली करने और पूंजीपतियों की तिजोरियां भरने का माध्यम तो हैं ही, गरीबों के लिए पेयजल के अभाव की स्थिति निर्मित करने और पर्यावरण को प्रदूषित करने का सबब भी बन गई हैं।

राज्य पानी सहित सभी प्राकृतिक संसाधनों का न्यासी है और ये सभी संसाधन सार्वजनिक उपयोग के लिए आरक्षित होने चाहिए। ऐसे में सरकारें पानी की बोतल के माध्यम से इन्हें निजी लाभ का माध्यम बनाने की अनुमति देकर व्यापक राष्ट्रीय हितों के विरुद्ध कार्य कर रही हैं। आम आदमी सहित सभी को साफ-सुरक्षित पानी उपलब्ध कराना सरकार का दायित्व है, उसे उसी दिशा में प्रयास करने होंगे। ***(स्रोत फीचर्स)***

अगले अंक में

स्रोत जनवरी 2008
अंक 11

- **स्तनपान से बच्चे होशियार बनते हैं मगर...**
- **परमाणु ऊर्जा सेहत के लिए घातक है**
- **जीव वैज्ञानिक नामकरण का पर्याय लिनियस**
- **चर्बी खाने से शरीर की घड़ी भ्रमित होती है**
- **शहरी यातायात**